VOL- X | ISSUE- V | MAY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

महिला कहानीकारों की कहानियों में चित्रित परिवार

डॉ शोभा एम्.पवार
सहयोगी प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
श्रीमती सी.बी.शाह महिला महाविद्यालय,सांगली
mail-shobhapawar69@gmail.com

प्रस्तावना-

महिला रचनाकारों ने अपनी कहानियों में पारिवारिक समान अधिकार स्त्री के लिए जरूरी माना है क्योंकि स्त्री भले ही आत्मनिर्भर है, हर क्षमता से परिपूर्ण है पर रहना तो उसे परिवार में ही है परिवार को छोड़कर वह अपना अस्तित्व मानती तक नहीं है. अतः एक स्वस्थ समाज के निर्माण के लिए उसकी नींव के रूप में परिवार मे स्त्री को समान अधिकार मिलना जरूरी है .आवश्यकता यह है कि परिवार में पुरुष के साथ संबंधों के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन होना जरुरी है. परिवार में स्त्री की महत्ता उसे प्राप्त अधिकार से परिलक्षित होती है.स्त्री के लिए यह एक दोहरी लड़ाई होती है क्योंकि चाहे वह पढ़ी-लिखी हो,मजदूर हो,शिक्षित हो घर परिवार का कल्याण वह अवश्य सोचती है.आज वह खुद को सिद्ध करके परिवार में अपना अधिकार प्राप्त कर रही है.इन्हीं पारिवारिक अधिकार को लेकर कई कहानियां लिखी गई है. जिसमें उल्लेखनीय है -स्वयं निर्णय लेने का अधिकार,गर्भपात का अधिकार,तलाक का अधिकार, सामाजिक अधिकार, विवाह संबंधी अधिकार,शिक्षा का अधिकार इस तरह के कई ऐसे अधिकार है जिसका चित्रण इन कहानियों में मिलता है.आगे चलकर हम देखते हैं कि नारी आरक्षण की आवश्यकता महिला रचनाकारों में प्रमुख रूप से चित्रित हुआ है I इसमें राजनीति का अधिकार, चुनाव का अधिकार, आर्थिक अधिकार,धर्म-पूजा पाठ विषयक अधिकार,तथा नैतिक अधिकार इस तरह के कई अधिकारों का विश्लेषण में महिला कहानीकारों की कहानियो में चित्रित हुआ है .कुछ प्रमुख कहानीकारों की कहानियों में परिवार का स्वरुप किस प्रकार से मिलता है,वह इस लेख में देखेगे-

मन्नू भंडारी की कहानियाँ प्रमुख रूप से परिवार केंद्रित होती है. इनकी 'सजा' कहानी एक ऐसी कहानी है जिसमें मध्यवर्गीय परिवार की अंतर्दशा का मार्मिक चित्रण किया गया है I परिवार के मुखिया पिता को अपने दफ्तर में पैसों की हेराफेरी के आरोप में सस्पेंड कर दिया जाता है.उस पर मुकदमा चलाया जाता है. चूँकि वह निर्दोष है लेकिन मुकदमे के फैसले तक उसकी नियमित आय जो उसकी तनख्वाह तक सीमित थी,वह बंद हो जाती है. आत्म स्वाभिमानी यह पिता दफ्तर से मिलने वाली आधी तनखा भी स्वीकार नहीं करता जो उसे सस्पेंशन के दौरान मिल सकती है I आर्थिक संकट के दौर से पूरा परिवार किस प्रकार जूझता है,यह बताना इस कहानी का उद्देश्य है.मनोवैज्ञानिक सूझबूझ से भरी यह कहानी आरोपी व्यक्ति के व्यवहार शिल्प उसका अपने बच्चों के साथ संबंध तथा अपने प्रति उसके सगे संबंधियों का व्यव्हार तथा दुराव इस कहानी में स्थान बनाते हैं .कहानी के अंत में आरोपी पिता रिहा कर दिए जाते हैं . लेकिन मुकदमे के दौरान सस्पेंड होकर इस परिवार को जो भोगना पड़ा है वह किसी सजा से कम नहीं है. इस कहानी के माध्यम से यही पता चलता है . कहानी की नायिका आशा है जिसे पिता के आरोपित किए जाने पर अपनी पढाई छोडनी पड़ती है उसे घर छोड़कर चाचा के यह रहना पड़ता है .छोटे भाई की पढाई पूरी हो इसलिए चाची के घर के सारे काम नौवी क्लास में पढ़ने वाली आशा को करना पड़ता है,यहाँ तक कि इस स्थिति के कारण उसे अपने आगे की पढाई छोड़ी पड़ती है.अर्थात कहानी में पूरा परिवार एक झटके के साथ टूट चुका है ,बिघर चुका है .मन्नू भंडारी जी की यह कहानी परिवार की व्यवस्था के साथ-साथ हमारी न्याय व्यवस्था और नौकरशाही पर भी बारीक नजर डालती है और उसे उजागर करना इस कहानी का उद्देश्य भी है. कहना न होगा कि परिवार के मुखिया को सस्पेंड कर दिया जाना और फिर पूरे परिवार का भुक्तभोगी बनना इस कहानी का उद्देश्य है I

महिला कहानीकार उषा प्रियंवदा ने चूँकि विदेशी परिवेश और भावभूमि पर अपनी अधिकांश कहानियाँ लिखी हैं किंतु उनकी कहानी 'कितना बड़ा झूठ' विवाह संस्था के पारंपरिक एवं पारिवारिक बंधनों की ऐसी त्रासदी को सामने लाता है जिसके आगे स्त्री की निजी भावना, स्वतंत्रता आदि का कोई अर्थ नहीं रह जाता. दांपत्य परिवार में विशेषकर स्त्री को संस्कार और अनुशासन का पालन करना पड़ता है.आधुनिक समाज की नारी अपने स्वत्रंत अस्तित्व एवं व्यक्तिव को स्थापित करने के लिए उन सभी मानदंडो, मूल्यों,नियमो एवं आर्दशो को त्यागना चाहती है,जो स्त्री होने के कारण केवल उसके लिए बनाए गए हैं.इस कहानी का मूल

स्वर यह है कि पुरुष निरंकुश होता है स्त्री ऐसी नहीं होती है.कहानी की मुख्य पात्र किरण दो बेटियों की मां है.एक कामकाजी महिला है अपने पति विश्व से वह बहुत प्यार करती है लेकिन फिर भी मैक्स नामक व्यक्ति से प्रेम करती है उसका यह जुड़ाव भावनात्मक रूप का है. लंबे समय के बाद वह अपने पति और बच्चों के साथ पूरा दिन बिताती है.किंतु किरण को अचानक पता चलता है कि मैक्स ने बिना बताए अपनी सहकर्मी वारिया से शादी कर ली है. और यह खबर भी उसे वारिया देती है,तो उसे बहुत बड़ा लगता है.कहानी का यही कथ्य यही है कि उसके लिए यह सबकुछ कितना इतना बड़ा झूठ था I

शर्मिला बोहरा जालान की कहानी 'मॉल मून'में एक परिवार की उस जटिलता का खुलासा किया गया है जिसमें एक मध्यवर्गीय परिवार विवाह के लिए किस तरह झूठ का सहारा लेता है,यह स्पष्ट किया गया है .सामाजिक परंपरा तथा दिखावा की प्रवृत्ति जो आजकल हमें मिलती है वही इस कहानी का मुख्य विषय है. इस कहानी के पात्र नीना और राहुल व्यावसायिक परिवार से संबंध रखते है .दोनों के पिता का व्यवसाय मंदा चल रहा है.नीना राहुल से चार वर्ष की बड़ी है . यह बात उससे छुपा देते है. राहुल के पिता की भी व्यवसायिक स्थिति अच्छी नहीं है. पूरी कहानी में दोनों विवाह हो जाने के बाद घूमने जाते हैं तो एक दूसरे को अपनी असलियत धीरे-धीरे खोलते है. इस कहानी का केंद्रीय पक्ष यही है कि नींना उससे चार साल की बड़ी है फिर भी राहुल उससे प्यार करता लेकिन उनके विवाह की बुनियाद झूठ पर आधारित है.महिला कहानीकारों की कहानियों में परिवार कि यह समस्या प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर होती है .वर्तमान समाज में हम देखते हैं कि विवाह की समस्या आज उल्लेखनीय रूप में मिलती हैं. लड़के को लड़की नहीं मिल रही है,लड़की को लड़का नहीं मिल रहा है.विवाह को लेकर एक अजीब किस्म की समस्या सभी परिवार के लिए सिरदर्द बन चुकी है.उम्र बढ़ रही है,और पसंदीदा जोड़ीदार उनको मिल नहीं रहा है.शायद इसलिए उपरोक्त परिवार वालों की तरह कई बाते छुपानी पड जाती है,आज विवाह की समस्या एक सामाजिक समस्या बन चुकी है I

चित्रा मुद्गल की कहानी 'लाक्षागृह'इसी प्रकार की विवाह समस्या को लेकर चलती है .जिसकी प्रमुख पात्र सुनीता रेलवे में नौकरी करती है .चालीस पार कर चुकी है.असुंदर होने के कारण सरकारी नौकरी होते हुए भी उसे कोई लड़का पसंद नहीं करता है.कहानी पढ़ी-लिखी कामकाजी स्त्री के अंतर्संघष को सामने लाती है I उसकी निजता और आत्मस्वाभिमान कदम-कदम पर तिरस्कृत होता है.परिवार में उसका महत्व केवल उसके वेतन पाने के लिए है I उसका सहकर्मी भी आर्थिक समझौते के तहत उससे शादी करने के लिए तैयार हो जाता है I जबकि वह इसे प्यार समझ बैठी थी.कहानी के अंत में उसे पता चलने पर यह शादी वह तोड़ देती है I कहानी के अंत तक उसका सुलगते रहना ही उसकी नियति है.यही परिलक्षित होता है I

गीतांजलि श्री की कहानी 'बेलपत्र' अंतरधर्मीय विवाह की समस्या को लेकर चलती है I मानवी संवेदनात्मक संबंध चाहे वह किसी हद तक अंतरंग हो समाज की उस प्रतिबंधात्मक सत्ता के बाहर नहीं होते हुए हर क्षेत्र में उसकी व्याख्या करती है I कहानी इस सत्य को धर्म के माध्यम से उजागर करती है I कहानी का प्रमुख पुरुष पात्र ओम हिंदू है जो एक मुस्लिम स्त्री फातिमा से प्रेम विवाह करता है .भारतीय समाज में हिंदू और मुस्लिम प्रेम विवाह कर लेना एक विरल घटना मानी जाती है I इस संदर्भ में उपरोक्त दोनों परिवार की अंततः स्वीकृति मिल जाती है.परंतु दांपत्य जीवन में यह इतना आसान नहीं होता है.और यही इस कहानी का मुख्य उद्देश्य प्रतीत होता है.धर्म के संस्कार में प्रेम की गहन अनुभूति से ऊपर उठकर अपनी भूमिका निभाते हैं I कहानी में हिंदू कथा नायक तथा मुस्लिम नायिका का अंतर्द्वंद्व जो दोनों के अंतरंग संबंधों को प्रभावित करता है,स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है. कहानी की नायिका फातिमा पूरी तरह से अपने कर्तव्य का निर्वाह करती है किंतु बीच-बीच में ओम के द्वारा टोकना,जैसे-वह बुरखा क्यों पहनती है,नमाज क्यों पढती है,अपने मायके क्यों जाती है. इन सारी बातों को लेकर फातिमा कहीं अंदर से टूटी हुई महसूस करती है .वह खुद को एक इंसान के रूप में देखना चाहती है, ना कि किसी धर्म के रूप में समाज के सामने अपना आदर्श रखना चाहती है I किंतु यह इतना आसान नहीं होता.पूरी कहानी में परिवार में घटी छोटी-मोटी घटनाओं का उल्लेख किया गया है .ओम की मां का अंततः उसे स्वीकार कर लेना,शिवजी की पूजा के लिए बेलपत्र चढ़ाने के उसे मान्यता दे देना. आगे चलकर सास की मृत्यु के बाद खुद फातिमा का शिवजी की पूजा करना I ये सारी घटनाएँ पारिवारिक संघर्ष के रूप में दिखाई देते हैं I किंतु दैनिक जीवन की समस्या फातिमा को तोड़ कर रख देती है .ओम का बार-बार उसके धर्म को लेकर टोकना,फातिमा को अंदर तक तोड़ कर रख देता है .उसे अपने त्यौहार को लेकर , अपने पसंद के रंग के कपडे को लेकर व्यंग्य सहन करना पड़ता है. मुस्लिम परिवार में जीनेवाली फातिमा बहुत हद तक अपने आप को हिंदू परिवार में ढालने की कोशिश करती है किंतु अंत में हमें यही दिखाई देता है कि वह टूट जाती है I समाज में इस तरह की मान्यता को आसानी से स्वीकार नहीं किया जाता है.उसपर से घर की छोटी-छोटी लड़ाईया उन्हें तोड़ के रख देती है .वह कहती है —'तुम्हारे रिश्तेदार,सबकुछ

तुम्हारा, तुम तो अपने ही बनकर रहे लेकिन मैं -मैं अकेली रह गई.वह कहती है-'ओम मैं इंसान हूं फरिश्ता नहीं सुन लो, मुझे मेरी दुनिया चाहिए इंसानोंवाली जिसमें तरह-तरह के रिश्ते हैं दूर के ,करीब के मुझे चार जिगरी दोस्तों के सहारे नहीं जीना. तुम बेवकूफ हो जिंदगी एक जरा सी 'इंटिमेट' घेरे में नहीं जी जाती. हर पल की इंटिमेसी सब इतने नजदीक सब एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानते हुए मेरा दम घुटता है .सांस लेने की थोड़ा दूर होना पड़ता मुझे चाहिए सब चाहिए". कहना ना होगा कि शादी के बाद अपने-अपने धर्म के अनुसार जितनी भी मान्यताएं हैं, इंसानी तौर-तरीके हैं.उन सबका निभा पाना बहुत मुश्किल हो जाता है. एक परिवार को चलाना वैसे भी आज के जमाने में मुश्किल है.एक स्त्री और पुरुष का एक साथ एक विचार के साथ परिवार के कर्तव्य और दायित्व का निर्वाह करते जाना मुश्किल काम होता है.इसके लिए रागात्मक और संवेदनात्मक जुड़ाव आवश्यक होता है I उस पर से इस कहानी में हिंदू और मुसलमान का प्रेम विवाह,पूरी तरह से निभा पाना कितना कठिन है यही प्रतीत होता है I

क्षमा शर्मा की कहानी 'इक्कीसवी सदी का लड़का' इस कहानी में आज के मध्यवर्गीय परिवार के बच्चे जिस के माता और पिता दोनों कामकाजी होते हैं वे अपने आप कैसे बड़े होते चले जाते है,इसका चित्रण मिलता है.इस सदी का बच्चा किस कदर स्वतंत्र रूप से आत्मनिर्भर होता चला जाता है. उसका नजरिया धीरे-धीरे बदलता जाता है.एक उम्र में बच्चा अपने मां-बाप से कुछ मूल्य ग्रहण करता है और उसके बाद उन मूल्यों का विकास उसके भीतर अपने आप होता चला जाता है I यह कहानी आज के समय के बच्चे के इस दौर को बहुत ही स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करती है I इस सदी के बच्चो को ,जिसे कुछ सीखाने की जरूरत नहीं होती,वह अपने आप सीख जाता है और अपना दृष्टिकोण अपना नजरिया अपनी मां को भी देता चला जाता है.परिवार का ढांचा किस प्रकार बदल रहा है यही इस कहानी कि विशेषता है I

मधु कांकरिया की कहानी 'दाखिला' एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो पति के द्वारा परित्यक्त कर दी गई है. वह अपने बेटे का दाखिला पब्लिक स्कूल में कराना चाहती है लेकिन उसे बार-बार इसी कारण असफलता मिलती है कि दाखिले के समय उसके साथ बच्चे का पिता यानी उसके पति का होना आवश्यक है.यह कहानी शिक्षा व्यवस्था में चले आ रहे है इस स्थिति पर भी प्रश्नचिन्ह लगाती है I बच्चे का बचपन खो रहा है, स्कूल बैग का वजन, होमवर्क का आधिक्य शिक्षा के व्यवहारिक रूप में सकारात्मकता नहीं है, यही दर्शाता है. कहानी का उत्कर्ष यह है कि नायिका का मनोबल टूटता जाता है. पर अपने बेटे से सही दिशा प्राप्त करती है. इंटरव्यू में प्रधानाचार्य से स्पष्ट कह देती है कि इस बच्चे के पिता उसके साथ नहीं रहते है I संवेदना के स्तर पर कहानी का कथ्य स्त्री के मनोबल का विस्तार करता है. कहना न होगा कि वर्तमान समाज के परिवार का ढांचा इतनी तेजी के साथ बदलता चला जा रहा है आज बच्चे अभिभावक के रूप में अपना जीवन जी रहे हैं. विशेषकर महिला कहानीकारों में बच्चों की भूमिका अभिभावक के रूप से दृष्टिगोचर होती हैं I बच्चो में परिपक्वता के प्रमाण अधिक मिलते है I

मृदुला गर्ग की कहानी 'बिंदी' एक ऐसी स्त्री की कहानी है जो एक दिन ही सही पर पूरी तरह आजाद होकर जीना चाहती है I सामान्य रूप से परिवार में पति द्वारा खाने-पीने, घूमने-फिरने,आचार-व्यवहार यहाँ तक की वेशभूषा तक पर पति का अंकुश होता है I कहानी की नायिका नीले सूट पर हरी बिंदी लगाती है जो एक बंधे-बंधाए नियम के विपरीत होता है. दांपत्य जीवन में स्पेस की आवश्यकता होती है .यही कारण है कि वह पति के एक दिन की अनुपस्थिति में सारे नियम को तोड़ देती है.आजादी के साथ जी लेना चाहती है. वह सबकुछ कर लेती है जो उसका जी चाहता है I हरी बिंदी उस अवहेलना का प्रतीक है जो वह उस बंधन के विरुद्ध व्यक्त करना चाहती है I

ममता कालिया की कहानी 'लड़कियां' दो लड़कियों की स्वत्रंतता को उजागर करने वाली कहानी है. यह सही है कि स्वतंत्रता के रास्ते में सबसे बड़ी बाधा उसका अपना परिवार होता है जिसमें स्त्री को छुईमुई और कमजोर बना दिया जाता है.इसी प्रकार के संस्कार उसे बचपन से दिए जाते हैं.कहा जाता है कि स्त्री बचपन में पिता और भाई,ससुराल में पति के द्वारा और वृद्धा अवस्था में पुत्र के द्वारा बंधित होती है I बंधन से मुक्ति उसकी आकांक्षा रही है .इस कहानी में दो पात्र है- आशा और सुधा.दोनों लडकिया एकदम बोल्ड हैं I हमेशा पढ़ाई में अव्वल क्लास में आगे बैठने वाली दोनों एम्ए. के बाद रिसर्च के साथ-साथ आईएएस की तैयारी करने वाली है I किंतु शाम के समय में देर रात तक घूमते रहना दोनों परिवार के लिए अत्यंत नागवार गुजरता है. जिसके कारण दोनों को कॉलेज में जाने के लिए बंदिश लगा दी जाती है .दोनों महत्वकांक्षी लडकियाँ हैं किंतु थोड़ी सी छूट उनके लिए सजा बन जाती है. कहानी यही उजागर करती है कि लड़कियों को देर तक बाहर घूमना नहीं चाहिए. इसी विषय को लेकर मराठी में एक फिल्म बनी थी- 'सातच्या आत'(सात के अंदर) यानी बाहर घूमाना परिवार के लिए सरदर्दी होता है.वैसे कारण भी स्पष्ट है आजकल .इतने सारी घटनाएँ घट रही है कि आज लडकिया बाहर सुरक्षित नहीं रही हैं I

निष्कर्ष-

अधिकांश महिला कहानीकारों ने स्त्री के लिए नैतिकता के मानदंडो को तोड़ा है.स्त्री आज वह सबकुछ कर रही है जिसकी मान्यता केवल पुरुषों के लिए हुआ करती थी. उसके लिए खाने-पीने,पहनने-ओढने,आचार-विचार सब कुछ के मानदंड बदल चुके हैं.कहना न होगा कि यह सब सोशल मीडिया के चलते हुआ है. यही कारण है कि इन कुछ-एक वर्षों में परिवार का ढांचा पूरी तरह बदल गया है.स्त्री कहानीकार इन्हीं बदलाव को पूरी सिद्धत के साथ चित्रित कर रही हैं I परिवर्तन समय की मांग है.शायद यही कारण है कि विवाह जैसी समस्या इन दिनों उल्लेखनीय रुप से दिखाई दे रही है. इसके पहले कभी यह समस्या इतनी तीव्र मिलती न थी. निजी मूल्य बोध तथा स्व का उद्घाटन स्त्री रचना की विशेषता मानी जाती है I उसका विरोध मौन और मुखर दोनों रूप में मिलता है किंतु यह भी सही है कि परिवार को बचाए रखने का काम भी स्त्री ही करती है .क्योकि पति के साथ-साथ उसे अपने बच्चे से अधिक जुड़ाव होता है.यही कारण है कि इन रचनाकारों की नायिका अकेले ही सही पर बच्चे के प्रति दायित्व का निर्वाह करती हुई प्रतीत होती हैं .वैसे भी नारी जीवन का मूलाधार उसके सामान अधिकार को प्राप्त कर लेने में है.तभी वह एक पारिवारिक विकासपूर्ण तथा गतिशील जीवन जी सकती है I

संदर्भ संकेत

1. संपा -प्रो.जय मोहन एम् .एस .,महिला:कहानी और कविता , लोकभारती प्रकाशन,इलाहाबाद . सं - 2011

ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com